पानीपत की तीसरी लड़ाई

पानीपत के युद्ध के कारण एक दशक पूर्व ही निर्धारित हो चुके थे। मुगल शक्ति विखंडित हो चुकी थी और उत्तर भारत में एक राजनीतिक शून्य की स्थिति पैदा हो गई थी। इस राजनीतिक शून्य की स्थिति को अहमदशाह अब्दाली के आक्रमण ने और भी पेचीदा बना दिया। नादिरशाह का उत्तराधिकारी अहमदशाह अब्दाली अपने पूर्वज की तरह भारत को लूटना चाहता था वहीं दूसरी ओर हिन्दू पद पादशाही की भावना से प्रेरित मराठे दिल्ली पर अपना प्रभुत्व स्थापित करना चाहते थे। युद्ध अवश्यंभावी हो गया।

कारण:– (1.) मुगल साम्राज्य में अस्थिरता – नादिरशाह के आक्रमण के बाद मुगल साम्राज्य की नींव बुरी तरह हिल गई थी। कई छोटे-छोटे क्षेत्र स्वतंत्र हो रहे थे। इस राजनीतिक शून्यता की स्थिति ने अब्दाली को भारत आने के लिए प्रेरित किया जहां मराठे भी प्रभुत्व स्थापित करने की प्रक्रिया में थे।

~~(2) मराठों की दिल्ली पर प्रभुत्व की चाहत – मराठे अपने आपको मुगल साम्राज्य का आंतरिक तथा~~

(2.) मराठा शक्ति का चरमोत्कर्ष – बालाजी बाजीराव के समय मराठों की शक्ति चरमोत्कर्ष पर थी। इसने साम्राज्य को विभिन्न दिशाओं में बढ़ाया। मालवा, गुजरात, बुंदेलखंड पर अधिकार जमाने में सफलता मिली। बंगाल पर हमले किए गए। दक्षिण में मैसूर राज्य और अन्य छोटे रजवाड़ों को नजराना देने के लिए विवश किया गया। हैदराबाद के निजाम को वार्षिक राजस्व वाले विशाल क्षेत्र मराठों को सौंपने पड़े। अपनी शक्ति के चरम उत्कर्ष पर पहुंचे मराठों ने दिल्ली पर भी अपना प्रभुत्व जमाने का प्रयास किया।

(3.) मराठों की दिल्ली की राजनीति में हस्तक्षेप – मराठे अपने आपको मुगल साम्राज्य का आंतरिक तथा बाह्य रक्षक भी मानते थे। इसके लिए 1752 में वजीर सफदरजंग ने मराठों से एक संधि की थी जिसमें अन्य शर्तों के अतिरिक्त उन्हें पंजाब, सिंध तथा दोआब से चौथ प्राप्त करने का अधिकार दे दिया गया। उसके बदले मराठों को मुगल साम्राज्य की आंतरिक तथा बाह्य खतरों से रक्षा करनी थी। इन्होंने इमाद-उल-मुल्क को वजीर बनाने में भी मदद की। अब्दाली नजीबुद्दौला को दिल्ली के मीर बख्शी के रूप में छोड़ गया था। मराठा सरदार रघुनाथ राव दिल्ली आए और वजीर गाजिउद्दीन को अपनी ओर मिलाकर नजीबुद्दौला को पदच्युत किया। इसलिए अब्दाली मराठों को सबक सिखाना चाहता था।

(4.) मराठों की राजनीतिक महत्त्वाकांक्षाओं के कारण क्षेत्रीय शक्तियों का नाराज होना –

(i) रुहेलखंड के नजीबुद्दौला और अवध के शुजाउद्दौला को मराठों ने हराया था।
(ii) राजपूताना राज्यों के आंतरिक मामले में हस्तक्षेप और भारी जुर्माना तथा नजराना लगाना
(iii) अवध पर बड़े क्षेत्रीय और मौद्रिक दावे
(iv) पंजाब में इनकी कार्रवाइयों ने सिख प्रधानों को नाराज कर दिया था

इस आंतरिक कलह की स्थिति का अहमदशाह अब्दाली ने फायदा उठाया और रुहेलखंड के नजीबुद्दौला और अवध के शुजाउद्दौला से गठजोड़ कर लिया वहीं दूसरी ओर मराठों के व्यवहार और राजनीतिक महत्त्वाकांक्षाओं ने उत्तरी शक्तियों को नाराज कर दिया था फलतः इन्होंने मराठों को सहयोग से इनकार कर दिया।

(5.) मराठों की पंजाब विजय – मार्च 1758 में मराठा सरदार रघुनाथ राव पंजाब की ओर बढ़ा और अब्दाली के पुत्र राजकुमार तैमूर को पंजाब से निकाल दिया। इससे मराठों और अफगानों में युद्ध आवश्यक हो गया।

(6.) नजीब एवं बंगश पठानों की अब्दाली से सहायता की अपील - अहमदशाह अब्दाली द्वारा 1752 में (7.) स्थापित संप्रभु राजनीतिक प्रबंध मराठों के हस्तक्षेप के कारण टूट गया था। नजीब एवं बंगश पठानों ने अब्दाली से अपील की। अहमदशाह अब्दाली सम्राट एवं विजेता ही नहीं, पठान भी था। अतएव पठानों एवं रुहेलों से प्रतिबद्ध एवं कट्टर मुस्लिम होने के नाते वह मराठों के अपने सहयोगियों के विरुद्ध अभियानों का विरोधी था। अहमदशाह अब्दाली को अवध के नवाब शुजाउद्दौला और रुहेला सरदार हाफिज रहमत खां, साहुल्ला खां आदि का समर्थन भी मिला। अतः 1759 ई. में अब्दाली ने भारत की ओर कूच किया।

पानीपत का युद्ध (14 जनवरी 1761) -

1759 के अंतिम दिनों में अब्दाली ने सिंध नदी पार की तथा पंजाब को रौंद डाला। साबाजी तथा दत्ताजी सिंधिया अब्दाली को रोकने में असमर्थ रहे और दिल्ली की ओर लौट गए।

उत्तर में मराठा शक्ति की पुनः स्थापना और अब्दाली को रोकने के लिए पेशवा ने सदाशिव भाऊ को दिल्ली भेजा। भाऊ ने 22 अगस्त 1760 को दिल्ली पर अधिकार कर लिया। मराठों और अफगान सेनाएं पानीपत के मैदान में आ डटीं। 14 जनवरी 1761 को युद्ध हुआ। मराठा फौज के पैर पूरी तरह उखड़ गए। (बालाजी बाजीराव) पेशवा का बेटा विश्वास राव, सदाशिव राव भाऊ और अन्य अनगिनत मराठा सेनापति करीब 28,000 सैनिकों के साथ मारे गए।